# लगनपचीसी ॥

## श्रीकृपानिवासजी कृत

जिस्में

अनेक प्रकार के बिहागरा, सोरठा
काफ़ी जैजैवन्ती टोड़ी आदि राग
श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमात्मा में
प्रीति उत्पन्न निमित्त वर्णित हैं
जिसको अयोध्यानिवासी ज्ञानाअली के
शिष्य रामकिशोर शरणजी ने

## सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

### बम्बई

बुकसेलर अयोध्याजी को छपवाने को दिया
मूल्य प्रति पुस्तक -)॥] [डा० म० )॥

श्रीजानकीबल्लभोजयति ॥

# लगनपचीसी ॥
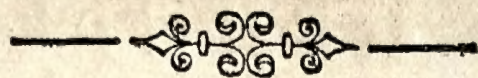
## रागधनाश्री मूलताल ॥

लगन कि चोटबिन मन गिरत न ऊँचोकोट।
मरद गरद के दरद लगै कछु परबस गरखरखोट १
मन गयंद मातो बिष मदिरा कोई हाथ न आवे॥
ताको लगन महाअंकुशलों पीतम पायँ नवावे२
शाबांधिचौकरीमृगलोंउछलेसिंहसबलनहिंडरिहै।
लगनिबीनकीभनकसुनेकहुँ बिनमारेमनमरिहै३

फणियरूपलोंजहरभरयोमनगहेकौनभयकारी॥
लगन मंत्रबल प्रबल निबलहै सेवतपरो पिटारी४
उड़ोफिरतजगठगमनखगलोंकोउनसकेबिरमाय
लगनबाजकी झपटपरे जब छूटनको अकुलाय ५
नारि अमानी शीलसयानी राखी भवन दुराइ॥
लगन कूटनीसों बतरावत मनपर हांथ बिकाइ ६
मानबड़ाई भयकुलस्यानप तबलों मनमेंअमीर॥
कृपानिवासलगनराघोकीजबलगिब्यापिनपीर७

लगन के जोर सो मन छूटे सकल मरोर॥
चोरकठोर घोर निशिजबलोंकोमलभय भयेभोर १
नेम नवारो नदी आपुमें तबलगि चलत सुखार
लगन लहरिकी गहरपरे जब बूड़ि मरेमँझिधार २
ज्ञानसयाने सोवत जबलग मानं महतमनमाहीं

लगनकलालीकरकोप्यालातबतकचाखतनाहिं ३
लाजकनौंडी यौंडी तबलौं टूटी मिलतनवांव ॥
उघर परेउर बातलगनकी डौंड़ी बजी सबगांव ४
फकत फकीरी करकैफैलसौं फाके में हुशियार ॥
लगेलालकी लगनलालची भूखइ भूख पुकार ५
सदा धीर बेपीर परखबिन तबलौं हँसत हँसाय ॥
लगन करदलगि दरदभरै जब करै हाय फिरहाय ६
रूप सुगुण धनयौबन जबलौं गर्बरह्यो भरिपूर।
कृपानिवास सर्बमद मनको लगनजर्बलगिचूर ७

## रागबिहागरा ॥

गुप्तलगनकी पीररी कोइ नाहिंन जानै ॥
लगनअग्निकी लपट अवांलौंनेही घटपाहिंचानै १

दारुलगे घुन चूरन अंतर बाहर पुष्ट समानै॥ मनसुच्छीनतनपीन तुहिमलौं लगनतापपिघलानै २ जरेबरेजगडरे मरे से हरे होत ललचाने॥ जासों लगी मरे मति टरिहैभरिहै दुखसुखमाने ३ और ब्याधितन प्रकटजनावैमिलैयतनबहुस्यानै कृपा निवास श्रीरामलगन को राम जतन उर आने॥ ४। ३॥

और रो भरि भोगरी कोई जतन हिरानै॥ औषद नाहिं वेदबिन महरम लगन रोग उरछानै॥ १॥ दामखराचि नहिं घरघर मांगी गड़ी निकारी नानै। उठी आय उरतापअनोखी कापै कौन बखानै॥ २॥ कठिन कमान जान कोमल मन बान कहरके तानै। पैठत हाय

जुहाय निकारत काढ़त प्रान पिरानै ॥ ३ ॥ सहि रहित पुनि चहत गहत गनलहत लाल लपटाने। कृपानिवास मरी नहिं जीवत परी लगन की पाने ॥ ४ । ४ ॥

नाहिं नगर में न्यावरी कोइ नेहीजनको ॥ बंधे लगन के फंदन में उतकरत कैद फिर मनको ॥ १ ॥ मृदु नवनीत अनल धरतावत कुलिश कठिन नहिंछेरै।मरे मृगनके बान चलावे गजरिपु उर नहिं नेरै ॥ २ ॥ भ्रमर बास बसि बसै केतकी पुनि कुसकंटक फोरै । मरेलगन की मारमरम सों फिरक्यों मारमरौरै ॥ ३ लगन पैंच सो खैंचलियो मन फिर हाहा क्यों कूकै ॥ लगन अगनजर भयकोयले फिर अहिरन क्यों

हूकै ॥४॥ प्रीति पायभरके फिर कैसे बिरह बलाय बढ़ावै । करैघायलप्यारी चितवानि लगि दुरि क्यों जहुरलगावै॥मित्र सुधाकर अग्नि चबावे लगन चकोर बिचारै। कृपानिवास निशा फल बिन नित नेही हाय फुकारै॥ ५।५॥

## राग सोरठ ॥

लगन निबाहे ही बनि आवै ॥ भाव कुभाव खवाब जानदे नेही नाम कहावै १ दृग अटके मनसौंपिदियोजब प्रीतमहांथबिकावै अपनोमननरह्योभयोपरबस कैसोहीन्यावचुकावै२ तनदहुद्रवनपवनहँसि उघरेतदपि लगनललचावै शीश उतारि चरणटुकरावै तबनिजभागासिहावै३ अवगुणबहुतसुगुणनहिं रंचक तौउनकेगुणगावै।

नेहुनिसोत नवल प्यारेको लाजदाग क्योंलावे४
कौड़ी प्राणगये कछुहानिन लाल रतनजो पावे॥
कुलसुखमुक्तिसुजातजानदैलगन नतनकगँवावै
कृपानिवासप्रीतप्यारोकोछोड़िन लोगहँसावैदा६

लगनटरे नहिं शिरटरिजावो। दरद दिवाने दिदार उपासी दमदरबार चढ़ावो १ चक्रत शूल कुलिश असिघापनहापन नाकफुलावो। प्राण सुजान पलकधरि आसन लाखन बिघ्न बटावो२ हाय तुरँगचढ़ि बिह्वलता दल बाण निशंक चलावो। लाजमर्याद महारिपु मारो नेह निशा-न बजावो॥ नेम जराय प्रेम धूनीकर लगन बिभूति रमावो। सेवोराम द्वार दृढ़ आसन दरश मधूकरपावो ४ ज्यों ज्यों जरे कनक अरु नेही

त्यों त्यों तेज सवावो। जैसे प्रबल तापरवि तैसे नेहीकमल खिलावो५संपति सदामित्रसों कहिये बिपत्ति न बात सुनावो। करो प्यार प्यारे सों अनुदिन पीतम प्यार पचावो ६ अरे रहोअरबीले हरिसों जगसों मति पतियावो॥ कृपानिवास लगन रेशम की गांठी गांठ लगावो ७।७॥

## रागकाफी॥

लगन अगिनकी तापरी जरिखाक भई हो। मनो मसान जगाई स्याने बरबस आंकि दई होरी॥१॥ बहुत बिहाल हाल कछु नाहिंन जादू जालगहीहोरी। जालझरोखन जारनिहारो सबदुख भूलिगई होरी॥२॥ लगन करूर मरीको मारत मरि मरि स्वास लई होरी। अरजी पहुँ-

चत गरजी चितकी मरजी पाउनहीं होरी ॥ ३
त्याग सकौं नहिं लाज लगनकी सीरी आगि दहीहोरी। कृपानिवास श्रीराम सजनसो समुझि सनेहु मरीहोरी ॥ ४ । ८ ॥

चोट लगीहैरी रामलगन की । प्राण सुधन तन सदन सुध न रही बदन प्रगटकर प्रीतअगन की ॥ १ ॥ औचकि उचकि चषन मगपैठी मूरति अतिबरबरण गगनकी ॥ छीन सुथान बिरानकरी मोहिं निपट अटपटीबान ठगनिकी २
लाजजरी मरजादटरी सब छाय परीअनुराग हगन की। कृपानिवास उसास हायके पगन कहां जहां पगन दगनकी ॥ ३ । ९ ॥

बारी मैंनोइश्क सतावै गल बिचपाय जँजीर

री । गई न बुलावन हाठि खरीदन् दिलबिच उठिपापीररी॥१॥मिलगठअंदरथानाकीता बिछुरी लाज बहीररी ॥ बेष अकेली मजन् मारत तकि तकि दुख देतीररी ॥२॥ किसनु देखावा किसनु सुनावा कितबल जवानी यीररी । कृपानिवास नदोष किसीनो चश्मोदी तकसीररी ॥ ३ । १०

हुईमैं दिवानी लगनके दरदसौ । सूरत पल फाके किरसौंलगि हेजिाकिरमस्ती पामरदसो १ सखी बेदरदी उसलउकेनकीती जरद हरद हरद सौं ॥ कृपानिवास दिलपुरजे कियेटुक रामलगन की करदसौं ॥ २ । ११ ॥

सुनरी सखी उसइश्ककी कहानी। दिलदरदी दिलदार दरशबिन देखि नजरभर करत दि-

वानी ॥ १ ॥ दिन अरु रात बात प्यारेकी जात गईपरहाथ बिकानी । कृपानिवास श्रीरामसजन की सूरति हेरि मैं हार हिरानी ॥ २ ।१२ ॥

कोई प्यारे फकीर दिवाने । इश्क अमलदा प्याला पीवत आठ पहर मस्ताने ॥ १ ॥ घूमत खरे चलति मतिवारे बोलतमन बौराने । कहर मेहर में सदा खुशाली दिलभर देखि लुभाने २ चस्म अरी सूरतसांवलदी साजन हाथ बिकाने। गईहँसै रोवे बरसाव चुपज्यों रहत अपाने ॥ ३ ॥ वेमाहिरम घरबार के सबहाँसि हाँसिदैदै ताने । कृपा निवास हुये दुनियां बिच कोइ घायल पहिं चाने ॥ ४।१३ ॥

कोइ सूनो दरदादिवाने । बेदरदी सों लगन

लगी है चले दरद दी घाते ॥ दरद उठत बैठत में दरद दी दरदहि दिनअरुराते। बोलनि चितवनि दरदभरी सी दरदमान मुसक्याते ॥ २ ॥ दरद मेखला पहिर फकीरी अब सुखहोय कहांते। दरद गये से कौनकाम की दरदभरी कुशलाते ॥ ३ ॥ दरद वंदीनो दरद सुनावा दरद हमारे हांथे। कृपा निवास दरद सों जीवनि येहीलगन की जाते ॥ ४।१४॥

## रागजैजवन्ती चौताला ॥

आशिक बेहोशभला सुनना गोश कहा चश्मों में जोश कहा यानी दिलजानिहै। आलम की ख्वारी जोर मालुम है प्यारी लागे गुलकी गुलजारीहू में पारीहू समानी है ॥ १॥

लाशक निवासकैहै पासकको कामनाहिं बाशक के जहर ज्यों गहर गहरानिहै। अक्कल दिवानी सबजानी जो बिरानी शिर सुनरी सयानी यह इश्क की कहानीहै ॥ कठिन कठिन बतियों लगत लगन की माई। मेरे लागी मेही जानौं काहूको जनावो नाहीं कोई न बूझनवारो पीर मेरेमनकी॥३॥चात्रिकुचकोरीमोरीसुरतश्यामसों जोरी छिनछिनछिन सजनजानी गतिबिरहिनि की। कृपानिवास अपनी लगतकछूनाहिं जानी प्यारे को मिलाव कोई सगी सो सगनकी ४।१५

लगन निगोड़ी मेरे पैड़ै माइ क्यों परीरी। काटत कलेजो काती धरकत निसुदिन छाती नाथी करके हालो मानों तांती शूलीपै धरीरी १

जहर मिलावत नीकै नई नई बात बनावति
खैंचति कठोर हलावति बंधुबासी में करीरी।
कुल शुद्द लाज भागी दुखभर पीर जागी
अँखियां लगोही लागी महाविषसों भरीरी।
कृपानिवासी कही घरकी न बनकी भई गई
नहिंवारे गरने प्रीतम प्यारी संगगरी री २१६।
लगन धुतपारी धूती सुधि बुधि सब हरी री।
सदाकी अमानी कीन्हीं बिकल दिवानी
मोको हाहाप्रीतसयानी तोको कहागुण दोष
री री। गई मेरीनींद भूख कुलकी निकाई गँ-
वाई लगन सुबैरनि माई हियरे सों ना टरी री १
जरो तन मन प्राण सुख दुखज सों निदान
लगन अनोखी माई तनकहु ना जरीरी। दुख-

दाई राम मिलाई जैसे पाई तैसे नचाई कृपा-
निवास लगनबश जीव तन में मशीरी २।१७ ॥
माई काहूके न लागो हेली चोट लगनकी
सीरीसीरी लागै आगी धिरीधीरी सुलगत पागे
फिर जागै भारी जरनी अगिनिकी १ जेरैपै
लगावत लोन बरजत चारा कौन मौन धरि
मोहन बैठे जानत न मनकी। जानीको जनाये
जीकी कहत सराहे नीकी पीकी रुचि ऐसीहीकी
फकी कहै मनकी ॥२॥ लगति न मानी बैरनी
निपट कठिनता अहिरनता पुनि कुटावती
मेहरन दुखसुख घनकी। तीखी तीखी छैनी
छौलै फिर फिर फूके तौले परहांथ वेंचति मोलै
जौलै चेरी जिनकी ३ करखनि फन्दनि बांधी

लैधन ब्रतनियमादि लगनलहर उदमादी दादी है ठगनकी। जबलगि लागति नाहीं तबलगि कुशल विहाई कृपानिवास बिकाई पगन द्रगन की ॥ ४ । १८ ॥

## रागबबा ॥

लगन निगोड़ी लगत सुखारी फिरपाछे दुखदाईरी। अँखियन सों मिल गडमे पैठे सब घरले अपनाईरी १ लाजमर्य्याद नेम ब्रत धीरज थाने सबल सिपाहीरी । छीने शस्तर पकरि निकाई आपुकरे ठकुराईरी २ मनसों भूप सुबश कर गर्वित फेरे देशदोहाईरी। आपु चहूँदिशि निडर किलोलत नेही को डुबराईरी ३ लड्डुवाके मिस देत धतूरा बहुत करै मितताईरी । कृपानिवास

भीत बश स्यानी को नाहीं बिकलाईरी ४।१९॥
लगन जालहै काल प्रगटि कहो उरझी किन सुरझाईरी। सर्बसखोई होई मन बिहरनि जिन यह लगन लगाईरी १ मतिचेतन बवरी करिराखे नेही मन बिकलाईरी। योबन जुरमे जायमिलै जनु सीरीपवन सुहाईरी २ बाढ़ैरोग कहा कहौं सजनी भटकि मेरे तनुबाई री। घन लौं गरजनि लागति प्यारी मोर सुमन ललाई री ३ पावै मारति औलनि गोलनि सोजानी निठुराई री। देत जुवां ज्यों दांव पहिलकी फिर लूट कुलतलगाईरी ४ करत फकीर अमीरन के सुत घर घर भीख मँगाईरी। कृपानिवास परी गरमेरे दुख दोभासुखदाईरी॥५।२०॥

लगन गरीबी गर्व गमायो भई दीन मति-हारीरी। चलिनसकौं थकि द्वार सजनके सुख दुख चाह बिसारी री १ काम क्रोध मद मोह बिसरगये काज लाज कुलडारीरी। मातु पिता सुत बन्धु मित्रसों घरबर तजिभइन्यारीरी २ कर्म करो नहिं भर्म भुलावो योग भोग जगटारीरी। प्रीतम बिन उझको नहिं औरन गांठी लगन हमारीरी ३ मनकी दौर जहांलगि सिमटी अटकी इकसोंयारीरी। जने जने सों प्यारकरै सो जन्म जन्म की ख्वारी री ४ औरनको आदर विषजानों सुधा सजन किरकारी री। और मिले घरदौर न मिलिहो प्रीतम पौरि पुकारीरी ५ हाहाखाई हाइ फिर होहो हारिहारि

हिय हारी री। कृपानिवास उपास रामसियातन
मन धन सब हारी री ॥ ६ । २१ ॥

## रागटोड़ी मूलताल॥

लगन जरी करप्यार सुँघाई सूंघत भई दिवानी
री। लहर चढ़ी कछु ख्वाब जनाया दिलभर गर
लिपटानीरी ॥ १ ॥ लपटानि कपट निपट दुख-
दाई तवाबुंद ज्यौं पानीरी। जहर कहरमें देत
सुन्योरी दियो मेहर दिलजानीरी ॥ २ ॥ जानि
पियो मन सजन हाथको झीने स्वाद लुभानी
री। लालनके घरलगन कमाई लग बारनि अज्ञ-
ज्ञानी री ॥ ३ ॥ जौन लगे चित कौन करे कुत
नेही यह गुजरानीरी । कृपानिवास दुकान
लगन की स्यानी कौन बिकानीरी ॥ ४।२२ ॥

## रेखता मूलताल ॥

मिली तनप्यार सों प्यारी खुलीमन इश्क
गुलजारी।सखीसोंश्यामकी बातैं। कहीहै जोहुई
रातैं ॥ १ ॥ मिलाथा ख्वाबमें अलमस्त धराथारी
झछाती दस्त। उठीमें चमक मन बहरम न देखा
सेजका महरम ॥ २ ॥ हुआमन हाल दरहाला
मिलैजालम ज़ुलुफ वाला। नजानों चश्मदुःख-
दाई खुशीमें डाल फिकराई ॥ ३ ॥ लगे बेदर्द
मासूका परी मैं दर्दवस कूका । कृपानिवास
स[illegible]न.रतियां लगी हैं रामकी बतियां ॥ ४।२३ ॥
[illegible]न्दर विष[illegible] इश्कको हांसी परी है कठिन गले
फांसी। न छूटेलाज की तांसी सजनके हाथसों
गांसी ॥ १ ॥ हुआमन आपना राजी करै क्या

खल्कदिलपाजी। जिन्होंसे डरबेडर भाजीसो जीतै इश्ककी बाजी॥ २॥ शिरोंको यारपर वारों जरे को और भीजारो। गरूरी खोय तन गारो सहींहै इश्कतब यारो॥ ३॥ कृपानिवास मनमे रे अवध के छैलने घेरे। परी हौं इश्कके फेरे नहीं मर्याद के नेरे॥ ४। २४॥

लगन लगी जबजोर पियारे औरमिलन में लहना क्यारे। दिल मिला दिलदार के दिलसों और मिलन में लहना क्यारे॥ १॥ लाख छोंड़ खाकतनमें पाकह्वै मन चहना क्यारे।कृपानिवास रामआशिक ह्वै फेरदुनियां में रहना क्यारे २। २५

जिस्को इश्क चटक लगा उसको जगतनहीं सूझता। फिरते लगनमद घूमते दिल की नहीं

कोई बूझता ।.१॥ पुरजे प्रीत शमशेर सों माशू-
क सन्मुख जूझता। कृपानिवास रामको चश्मों
के पानी पूजता ॥ २। २६ ॥

सुनरी इश्क नहिं जोरना जुरिजाय तो फिर
नहिं तोरना । कुललाज काज उड़ाइ दे प्यारे
सोंप्यार बढ़ायदे ॥ मनप्राण तनधनवारिये लाल-
न को रूप निहारिये । कृपानिवासी बूझिये न
नयनों से दूर न हूजिये ॥ २। २७॥

खोश गुजर सों गुजरान करो मत इश्क की
खातकरो। दुखहोयगा सुखजायगा टुक समझि
के जियमेंडरो ॥ १ ॥ जबतीर चश्मों के लगे तब
घरिके फिरके परो। बेदर्द दिल माशूकदा फिरि
याद नहिं रोरोमरो ॥ २ ॥ पलपल रुयाई कहर

आतश कुर्बान आशिक भी जरो। फिरफूंकमारे जहर की मन मैं हरकी घारियांधरो ॥ ३ ॥ शिर साहिबी खूबी सबी दिल्दार के पायन् धरो ॥ कृपानिवासी रामयारी सहीख्वारी जोभरी४।२८

## राग झँझौटी ॥

मैनेनुकर दिवाने दरद भरि तेड़ी बतिया। इश्क लपेटी बेदरदी मैड़े रामावारी रामाघाव करेदीमेड़ी छतियां ॥ कृपानिवासीबेरसबसकीती मैड़ै रामा कल न परै दिन रतियां ॥ १ । २९ ॥

## रागकाफी जंगला ॥

पारीटुकलगियां ओर निबाहना ॥ कि साज-हान करै नहिं सुनना इश्क लग्म शिर लावना।

कृपानिवास बंदी दे खातर राम रसिक घर आव-ना १।३०॥इश्क लगातो निबाहिये राघवीबोया रमेड़ा कृपानिवासहुनबंदीमें तेड़ी नाहकलोग हँसाइयां १।३१ वारीमैड़ा इश्क लगा तुमसों हावे वारी राम रमा रमसों । मस्तभई फिरदी कुल आलम्म लरजी नाहगमसों १ हावे बारीजिद गई दमसौं । कृपानिवासयई बसतैडे मुरसदके हुकमसौं ॥ वारी रामा क्या सलाहमसौं २। ३२ वारीवोसजनमें यारीदादरजा दूरहै ॥महबूबानो पलँग बिछादे आपु खुशीतनधूरहै । कृपानिवास राम सूरति का आशिक सदा हजूरहै ॥ १ ।३३॥

## राग खम्माच ॥

कमल नयनसों मोरी लगन लगीरी माई

श्याम सलोनी लौनी मूरति चितवत प्राणठगी री माई॥स्वप्न सुभाय भाय रसमाती सुरति सुहागजगीरीमाई।मैं जानौंकै जासों लागी उर चेतनता उघरीरीमाई २ वाबिन आन कछू नहिं भावै लै रस लाज तगीरी माई। उभैके कानएक असवारी शोभा कौन जगीरी माई ३ कुलहारि बास आस तन धनकी तनकन पीतसगीरी माई। कृपानिवास कहां अब जैये सियबर हाथ दगीरी माई४।३४मेरीलगी रामसों डोरी जगसों नहिं डरनानहिं डरना।एककहौकोइ लाखकहोरी आगा पीछा क्या करना १ चारि दिना की जगत चांदनी आखिर इक दिनहै मरना।स्वारथ सगे कुटुम्बी देखे परखे इन मिल क्या सरना २

वर्णाश्रम कुलधर्म कर्म ब्रत करि जे जन्मभरि दुख भरना।खोटी सँगति मूरख डूबे साधु सँगति में है तरना ३ सीतापति गुरुदेव बतायो सब साधन तजि उर धरना । कृपानिवास रामरस पायो जब पकरे दृढ़ गुरु रचना ॥४॥२५॥

## रागकाफी॥

जबलगि लगन न हरिसों जोरे । बिबिधि मनोरथ परत छूछजिमि मृग जल शुक्तिटटोरे१॥ चिंतामणि घनश्याम भक्ति तजि कांच कर्म सुख धौरे । बिनदृगरूप भूपबिन बसुधा धन बिनु तरुणि निहारे २ स्वर्गो श्री रघुनाथ शरण टरि खरभज स्वाद बटोरे । मैन जराये सैन रस चाहे फेन गहे शिर बोरे ३ सबसों बिसलुक

कुशल कि अपयामुख सों तोरे । रंक धनद कहि-
यंक बिशद बश सदरस संकन छोरे ४ हंस बि-
कार कारागहि पावन बान गई बहो रे । कृपा-
निवास उपास हेतु बिन मूरख मंडप पौ रे ५ ३६

लगन लगी नाहिं छूटै रामसों । कोटि यतन
कर कोइ भरमावै प्रीति गांठिनहिं छूटै १ अग्नि
जलावो जलमें बोरो सर्बस मेरो कोई लूटै । टूक
टूकतनके करिडारे कोउ तऊन हरिसोंटूटै२लागी
मोरी रामपियासों जगतभले सबरूठै। मैं प्यासी
रस प्रेमसुधाकी छाछ जगतको न घूटै ३ प्रेम
कटारी मनुवाछे घोक सकत न ऊठै । जाके
लागी सोईजानै मूरख भावै झूठे ॥ कृपानिवास
लगी रघुबरसों चरण कमल रसलूटै ॥ ४ । ३७ ॥

रामलग्यौ जाको और न लागे। नवग्रह भूत प्रेत देव दानव उत पित्र यम किंकर भागे॥ कर्म कालकलि क्लेश कुमारग काम क्रोध कोई आवे न आगे १ चोर चुगुल चिन्ता छल जादू यन्त्र मन्त्र जग कबहुँ न लागै। दगादोष दुर्वाद दूत दुख दगा दरिद्र दूरते त्यागै॥ २। ३८॥

ठगठाकुर काकरि कठि कंट कुसक पंकपर अंकन पागे। लाभ लोभ लालच अपलक्षण पापपीर पाखंडन दागे १ अनल अनिलजल थल एकै चर गोचर परचर बिघ्नाबिरागे। जाग्रत स्वप्न मनोरथ मादक मायामोहकी सुरगईबागे॥ कृपानिवास कहे मोहिं लागो जानकी बरपागो अनुरागो॥ २। ३९॥

गुमानी रामथारा तो नयनाने मुजैमारावै। बेदरदी दिल दरद न जानै रूपछुवत मतवारा वे॥ १॥ बान नवारे दिवन येई है मारत नाहिं सभा रावे। कृपानिवासी वारि अवधि विलासी यहितन मन प्राण तुम्हारावै॥ २।४०॥

इतिश्री लगनपचीसी कृपानिवासजीकृतसंपूर्णम् सम्बत् १९५७॥